संधि प्रकरण

संधि की परिभाषा = दो वर्णों के मेल से उनके मूल में जो परिवर्तन आता है, उसे संधि कहते हैं।

उदाहरण = विद्या + आलय = विद्यालय

स्वर संधि के भेद

- दीर्घ
- गुण
- वृद्धि
- अयादि
- यण

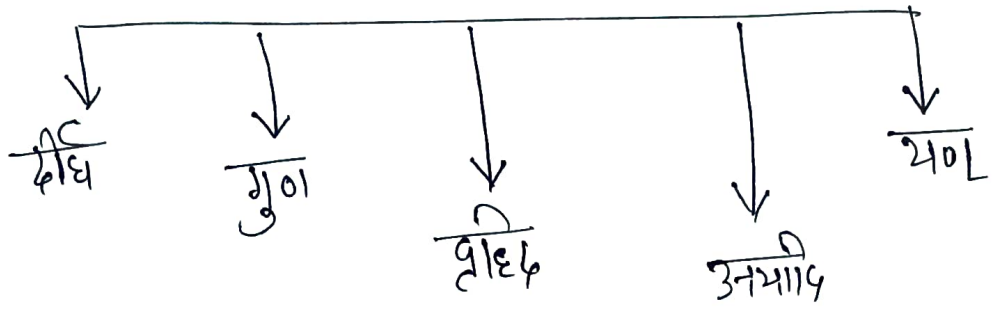

संधि के सूत्र निम्नलिखित हैं। (1) अकः सवर्णे दीर्घः

(2) अदेङ् गुणः

(3) वृद्धिरादैच्

(4) एचोऽयवायावः

(5) इको यणचि

क्रमशः उदाहरण हैं = दीर्घ संधि – आ, ई, ऊ की मात्रा

यथा = विद्या + आलयः = विद्यालयः

यथा = गिरि + ईशः = गिरीशः

यथा = मधु + उत्सवः = मधूत्सवः

(2) गुण सन्धि - ए, ओ की मात्रा
उदाहरण ⇒ नर + ईश = नरेश
रमा + ईश = रमेश
महान + उदय = महोदय

(3) वृद्धि सन्धि ⇒ ऐ, औ की मात्रा
(ऊपर दो मात्रा)
यथा = यथा + एव = यथैव
महा + ईश्वर = महैश्वर

(4) यण सन्धि ⇒ य, व, र के पहले आधा वर्ण
उदाहरण = सु + आगत = स्वागत
अति + अन्त = अत्यन्त
प्रति + एक = प्रत्येक

(5) अयादि सन्धि ⇒ ए, ऐ, ओ, औ की मात्रा नहीं आती है।
अयादि आदेश होते हैं।
यथा = गौ + अक: = गायक: (औ का आय और हुआ है)
- पावक: = पौ + अक: -

धन्यवाद:

इसी प्रकार के ज्ञान के लिए संपर्क बनाये

अध्याय

७

उद्भव

ईसा पूर्व पांचवीं-छठी शताब्दी पूर्व में वैदिक कर्मकाण्ड के विरोध में जिस महान् धार्मिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ था, उसके प्रवर्तकों में वर्द्धमान महावीर के साथ-साथ गौतम बुद्ध भी थे। जैन और बौद्ध आगमों का अनुशीलन यह सिद्ध करता है कि यह क्रान्ति प्रारम्भ में पूर्णतया धार्मिक ही थी, उसमें उपासना, आचार या धार्मिक कर्मकण्ड की ही प्रबलता थी, दार्शनिक तत्त्व कहीं-कहीं बिखरे हुए थे, किन्तु कुछ समय पश्चात् सामयिक आवश्यकता वश दार्शनिक तत्त्वों का उभार कुछ अधिक हो गया और उसी अनुपात में आचारपक्ष कुछ दब गया। ईसा के बाद की शताब्दियों में उक्त दोनों ही मतों के अनुयायी विद्वानों ने आगमों में बिखरे हुए दर्शन तत्त्वों को इकट्ठा कर जिन दार्शनिक सम्प्रदायों की नींव डाली, वे ही जैनदर्शन और बौद्धदर्शन के नाम से प्रसिद्ध हुए।

यह तथ्य यह सिद्ध करता है कि ऐतिहासिक दृष्टि से जैनधर्म और दर्शन बौद्ध धर्म और दर्शन से पूर्ववर्ती हैं। बौद्ध त्रिपिटकों में जैन तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर का, निगण्ठ नाटपुत्त के रूप में केवल संकेत ही नहीं मिलता अपितु उनके विचारों और मृत्यु का भी उल्लेख मिलता है। इससे भी उपर्युक्त तथ्य की ही पुष्टि होती है। आधुनिक विद्वान् महावीर और बुद्ध को समकालीन मानते हुए भी महावीर को बुद्ध से वयोवृद्ध से मानते हैं। जैन परम्परा की दृष्टि से महावीर जैनों के चौवीसवें तीर्थंकर थे—जैन धर्म के प्रवर्तक नहीं। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि गौतम बुद्ध के बहुत पहले ही जैन धर्म के सिद्धान्त किसी न किसी रूप में प्रचलित थे। वास्तव में जैन और बौद्ध धर्म दोनों ही उस प्राचीन श्रमण परम्परा के प्रतिनिधि थे जिनका संकेत प्राचीन उपनिषदों में पर्याप्त रूप से मिलता है। इस प्रकार जैनधर्म के बौद्ध-धर्म की अपेक्षा प्राचीन होने पर भी, बौद्धधर्म भी पूर्व परम्परा से प्रचलित सिद्धान्तों पर ही विकसित हुआ, यह कहा जा सकता है। इस परम्परागत श्रमण विचारधारा के साथ ही बौद्धधर्म और दर्शन को महान् बनाने में बुद्ध के व्यक्तित्व और महान् तपस्या का भी बहुत बड़ा योगदान है। अतः बौद्धधर्म और दर्शन को जानने से पूर्व बुद्ध के जीवन पर दृष्टिपात करना उचित होगा।

गौतम बुद्ध का जीवन और व्यक्तित्व

बौद्ध ग्रन्थों के आधार पर विद्वानों की मान्यता है कि बौद्धधर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से ५६३ वर्ष वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को कपिलवस्तु (आधु-

गया। पहली संगीति अजातशत्रु के समय में महाकाश्यप की अध्यक्षता में हुई जिसमें ५०० भिक्षुओं ने बुद्ध वचनों का संग्रह किया और उनके प्रचार की व्यवस्था की। दूसरी संगीति बुद्ध के निर्वाण के १०० वर्ष पश्चात्, आचार्य सब्बकामी के सभापतित्व में वैशाली में आयोजित की गई, जिसमें ७०० भिक्षुओं ने सम्मिलित होकर बुद्धवचनों को तीन पिटकों, पाँच निकायों और नौ अंगों में विभक्त किया। दूसरी संगीति अशोक के समय तिस्स मोग्गलिपुत्त के सभापतित्व में पाटलिपुत्र में हुई, जिसमें १००० भिक्षुओं ने इकट्ठे होकर त्रिपिटकों को अन्तिम रूप दिया। त्रिपिटकों का आज का पाठ उसी संगीति के द्वारा निर्णीत माना जाता है। इसी क्रम में, चौथी और अन्तिम बौद्ध संगीति महाराज कनिष्क के समय आचार्य पार्श्व के सभापतित्व में काश्मीर के कुण्डलवन विहार में आयोजित की गई (१०० ई०)। इसमें त्रिपिटकों पर भाष्य लिखने के साथ-साथ संस्कृत में कार्य करने का निश्चय किया गया।

बौद्ध धर्म और दर्शन का प्राचीन साहित्य

बौद्ध धर्म और दर्शन से सम्बद्ध प्राचीन या मूल साहित्य दो भाषाओं में उपलब्ध होता है—पालि और संस्कृत। यहाँ इसी क्रम से सम्बद्ध साहित्य का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(१) पालि—बुद्ध के समय पाटलिपुत्र के आस-पास जिस भाषा का प्रयोग होता था, उसे 'पालि' कहा जाता है। बुद्ध के मूल उपदेशों की भाषा यही 'पालि' है। इसमें प्राचीन बौद्ध साहित्य का जो भाग संकलित है उसे दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—(i) त्रिपिटक और (ii) अनुपिटक।

(i) त्रिपिटक—'त्रिपिटक' या 'तिपिटक' शब्द का अर्थ है तीन पिटारियाँ या तीन महाग्रन्थ समूह। इनमें बुद्ध के मूलवचनों के रूप में सुरक्षित सैकड़ों ग्रन्थों का संकलन है। इस पूरे ग्रन्थ-समुदाय की विशालता परिमाण में 'महाभारत' से तीन गुनी है।

डा० राइज् डेविड्स के अनुसार इस 'त्रिपिटक साहित्य' का संकलन बुद्ध के शिष्यों के द्वारा बुद्ध के निर्वाण काल अर्थात् ई० पू० पाँचवी सदी से महान् अशोक के समय अर्थात् तीसरी सदी ई० पू० तक किया गया था। बौद्ध देशों लंका, वर्मा और थाईलैण्ड आदि में इसे 'रामायण' के समान पवित्र माना जाता है।

इसमें, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, तीन पिटकों का समावेश है—(अ) सुत्त पिटक (ब) विनय पिटक और (स) अभिधम्म पिटक।

(अ) सुत्तपिटक—इस ग्रन्थ में बुद्धसंघ से सम्बद्ध नियमों (अनुशासन) से सम्बद्ध बुद्धवाणी का संकलन है। इसकी रचना गद्य और पद्य दोनों में हुई है। इसके पाँच भाग हैं—

(क) दीर्घनिकाय—यह ३४ सुत्तों और ३ वर्गों